रविवार 22 सितंबर, 2019

*विषय* — सामग्री

***स्वर्ण पाठ:*** **II कुरिन्थियों 6 : 16**

"और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।"

**उत्तरदायी अध्ययन**: **गलातियों 3: 3**
**I कुरिन्थियों 6: 15, 19, 20**
**I कुरिन्थियों 8: 4-6**

3 क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?
15 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं?
19 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥
4 सो मूरतों के साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं।
5 यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईश्वर ओर बहुत से प्रभु हैं)।
6 तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं।

## पाठ उपदेश

***बाइबल***

## 1. व्यवस्थाविवरण 5: 6 (*से 1st*,), 7-9 (*से* :)

6 तेरा परमेश्वर यहोवा,
7 मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना॥
8 तु अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में, वा पृथ्वी के जल में है;
9 तू उन को दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना;

## 2. यशायाह 42 : 6-8, 12, 16-18

6 मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले,
7 बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और जो अन्धियारे में बैठे हैं उन को काल कोठरी से निकाले।
8 मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा।
12 वे यहोवा की महिमा प्रगट करें और द्वीपों में उसका गुणानुवाद करें।
16 मैं अन्धों को एक मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे नहीं जानते और उन को ऐसे पथों से चलाऊंगा जिन्हें वे नहीं जानते। उनके आगे मैं अन्धियारे को उजियाला करूंगा और टेढ़े मार्गों को सीधा करूंगा। मैं ऐसे ऐसे काम करूंगा और उन को न त्यागूंगा।
17 जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते और ढली हुई मूरतों से कहते हैं कि तुम हमारे ईश्वर हो, उन को पीछे हटना और अत्यन्त लज्जित होना पड़ेगा॥
18 हे बहिरो, सुनो; हे अन्धो, आंख खोलो कि तुम देख सको!

## 3. यूहन्ना 9 : 1-3, 6, 7, 15, 26-28, 30, 32-38

1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?
3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।
6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

15 फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गईं? उस न उन से कहा; उस ने मेरी आंखो पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब देखता हूं।
26 उन्होंने उस से फिर कहा, कि उस ने तेरे साथ क्या किया? और किस तेरह तेरी आंखें खोलीं?
27 उस ने उन से कहा; मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने ना सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?
28 तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं।
30 उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते की कहां का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं।
32 जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखे खोली हों।
33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।
34 उन्होंने उस को उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है? और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया॥
35 यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उसे भेंट हुई तो कहा, कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?
36 उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?
37 यीशु ने उस से कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है।
38 उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उसे दंडवत किया।

## 4. रोमियो 6 : 16, 19

16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धामिर्कता है
19 मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगो को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।

## 5. रोमियो 8 : 5, 9 (*से 2nd* ,), 14

5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
9 तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।

## 6. I कुरिन्थियों 10 : 14, 19, 20

14 इस कारण, हे मेरे प्यारों मूर्ति पूजा से बचे रहो।
19 फिर मैं क्या कहता हूं क्या यह कि मूरत का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है?
20 नहीं, वरन यह, कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिये नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं: और मैं नहीं चाहता, कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो।

## 7. प्रेरितों के काम 17 : 16-18, 22-25, 27 (*वह*), 28

16 जब पौलुस अथेने में उन की बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।
17 सो वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उन से हर दिन वाद-विवाद किया करता था।
18 तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितों में से कितने उस से तर्क करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहना चाहता है परन्तु औरों ने कहा; वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह यीशु का, और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था।
22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।
23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।
24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
25 न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।
27 ... वह हम में से किसी से दूर नहीं!
28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

## 8. I यूहन्ना 5 : 4, 20, 21

4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

21 हे बालको, अपने आप को मुरतों से बचाए रखो॥

## *विज्ञान और स्वास्थ्य*

### 1. 335: 7 (आत्मा)-8 (*से 2nd.*)

आत्मा, ईश्वर, ने सभी को स्वयं में बनाया है। आत्मा ने कभी सामग्री नहीं बनाई।

### 2. 591 : 8-15

सामग्री. पौराणिक कथा; मृत्यु दर; नश्वर मन का दूसरा नाम; मोह माया; बुद्धि, पदार्थ, और गैर-बुद्धि और मृत्यु दर में जीवन; जीवन के परिणामस्वरूप मृत्यु, और जीवन में मृत्यु; बेसुध में सनसनी; पदार्थ में उत्पन्न होने वाला मन; सत्य के विपरीत; आत्मा के विपरीत; ईश्वर के विपरीत; वह, जिसमें से अमर मन कोई संज्ञान नहीं लेता है; वह जो नश्वर मन देखता है, महसूस करता है, सुनता है, चखता है, और जो विश्वास में ही गंध लेता है।

### 3. 146 : 5-6

पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था।

### 4. 119 : 1-5 (*से*,)

जब हम अस्पष्ट आध्यात्मिक शक्ति के साथ बात करते हैं, - जब हम अपने सिद्धांतों में ऐसा करते हैं, तो निश्चित रूप से हम वास्तव में इस बात का समर्थन नहीं कर सकते हैं कि यह क्या है और क्या नहीं कर सकता है, - हम सर्वशक्तिमान।

### 5. 94 : 1-3

यीशु ने सिखाया कि केवल एक ईश्वर है, एक आत्मा है, जो आदमी को खुद की छवि और समानता में बनाता है, — आत्मा की, पदार्थ की नहीं।

### 6. 292 : 13-18

पदार्थ नश्वर मन की आदिम मान्यता है, क्योंकि इस तथाकथित मन का आत्मा के प्रति कोई संज्ञान नहीं है। नश्वर मन के लिए, सामग्री पर्याप्त है, और बुराई वास्तविक है। नश्वर की तथाकथित इंद्रियां भौतिक हैं। इसलिए नश्वर का तथाकथित जीवन सामग्री पर निर्भर है।

**7. 174 : 4-6**

क्या सभ्यता केवल मूर्तिपूजा का ही उच्चतर रूप है, कि मनुष्य को मांस-ब्रश से लेकर, स्नान करने, आहार, व्यायाम और वायु तक को झुकना चाहिए?

**8. 186 : 32-11 (*से*,)**

मानव मन शुरू से ही मूर्तिमान रहा है, अन्य देवताओं और एक से अधिक मन में विश्वास रखता है।

जैसा कि नश्वर भी नश्वर अस्तित्व को समझ नहीं पाते हैं, वे सभी अज्ञानी मन और उनकी रचनाओं से कितने अनभिज्ञ होंगे।

यहाँ आप देख सकते हैं कि तथाकथित भौतिक बोध कैसे विचार के अपने रूप बनाता है, उन्हें भौतिक नाम देता है, और फिर उनकी पूजा करता है और उनसे डरता है। बुतपरस्त अंधेपन के साथ, यह कुछ सामग्री भगवान या दवा की क्षमता से परे है। मानव मन की मान्यताओं ने उसे लूट लिया और उसे गुलाम बना लिया,

**9. 214 : 18-21**

हम सामग्री के लिए झुकते हैं, और मूर्तिपूजक की तरह भगवान के बारीक विचारों का मनोरंजन करते हैं। मनुष्यों को डर लगता है और वे एक आध्यात्मिक शरीर की तुलना में भौतिक शरीर को अधिक मानने का पालन करते हैं।

**10. 170 : 32-3**

सामग्री, जो दैवीय शक्ति को अपने हाथों में लेती है और एक निर्माता होने का दावा करती है, एक कल्पना है, जिसमें बुतपरस्ती और वासना समाज द्वारा इतनी स्वीकृत हैं कि मानव जाति ने अपने नैतिक छूत को पकड़ लिया है।

**11. 308 : 1-4**

क्या आप इस विश्वास में निवास करते हैं कि मन भौतिक है, और यह बुराई मन है, या आप जीवित विश्वास में कला है कि एक ईश्वर है और उसकी आज्ञा रख सकता है? "

**12. 228 : 25-27**

ईश्वर से अलग कोई शक्ति नहीं है। सर्वव्यापी के पास सर्व-शक्ति है, और किसी अन्य शक्ति को स्वीकार करने के लिए भगवान को बेइज्जत करना है.

**13. 208 : 5-16**

शास्त्र कहते हैं, "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं." फिर यह प्रतीत होने वाली शक्ति क्या है, जो ईश्वर से स्वतंत्र है, जो बीमारी का कारण बनता है और इसे ठीक करता है? यह विश्वास की त्रुटि, नश्वर मन का नियम, हर दृष्टि से गलत, पाप, बीमारी और मौत को गले लगाने के अलावा क्या है? यह सत्य के, और आध्यात्मिक नियम के अमर मन के बिल्कुल विपरीत है। यह परमेश्वर के व्यवहार की भलाई के अनुसार नहीं है कि वह मनुष्य को बीमार कर दे, फिर मनुष्य को खुद को ठीक करने के लिए छोड़ दे; यह मानना बेतुका है कि सामग्री बीमारी का कारण और इलाज दोनों कर सकती है, या यह कि आत्मा, ईश्वर, बीमारी पैदा करता है और सामग्री पर अपना उपचार छोड़ देता है।

**14. 393 : 16-24**

अपनी समझ में दृढ़ रहें कि दिव्य मन शासन करता है, और यह कि विज्ञान में मनुष्य ईश्वर की सरकार को दर्शाता है। इस बात का कोई डर न रखें कि सामग्री दर्द कर सकती है, सूजन हो सकती है, और किसी भी प्रकार के नियम के परिणामस्वरूप सूजन हो सकती है, जब यह स्व-स्पष्ट है कि सामग्री में कोई दर्द नहीं हो सकता है और न ही सूजन हो सकती है। आपका शरीर किसी पेड़ के तने की तुलना में तनाव या घावों से अधिक पीड़ित नहीं होगा, जिसे आप तोड़ते हैं या बिजली के तार जो आप खींचते हैं, क्या यह नश्वर मन के लिए नहीं थे।

**15. 397 : 26-32**

हम नश्वर मन और सामग्री को अलग-अलग कभी भी उपचार नहीं दे सकते, क्योंकि वे एक के रूप में संयोजित होते हैं। इस विश्वास को त्याग दो कि मन अस्थायी रूप से खोपड़ी के भीतर संकुचित है, और तुम जल्दी से अधिक मर्दाना या स्त्री हो जाओगे। आप खुद को और अपने निर्माता को पहले से बेहतर समझेंगे।

**16. 425 : 23-4**

चेतना एक बेहतर शरीर का निर्माण करती है जब सामग्री में विश्वास की जीत हुई है। आध्यात्मिक समझ से भौतिक विश्वास को ठीक करें, और आत्मा आपको नए सिरे से बनाएगी। आप फिर से ईश्वर को नाराज करने के अलावा कभी नहीं डरेंगे, और आप कभी भी यह विश्वास नहीं करेंगे कि हृदय या शरीर का कोई भी हिस्सा आपको नष्ट कर सकता है।

यदि आपके पास ध्वनि और क्षमता वाले फेफड़े हैं और चाहते हैं कि वे ऐसे ही रहें, तो आनुवंशिकता में विपरीत विश्वास के खिलाफ मानसिक विरोध के साथ हमेशा तैयार रहें। फेफड़ों, ट्यूबरकल, विरासत में मिली खपत, या किसी भी परिस्थिति से उत्पन्न होने वाली बीमारी के बारे में सभी धारणाओं को छोड़ दें, और आप उस नश्वर मन को पाएंगे, जब सत्य द्वारा निर्देश दिया जाता है, जिससे दिव्य शक्ति प्राप्त होती है, जो शरीर को स्वास्थ्य में बदल देती है।

**17. 380 : 32-1**

मनुष्य को शासित करने वाला पदार्थ या शरीर का प्रत्येक नियम, जीवन, ईश्वर के नियम से खाली और शून्य प्रदान किया जाता है।

**18. 428 : 15-21**

हमें अस्तित्व को संरक्षित करना चाहिए, न कि "अज्ञात भगवान को" जिसे हम "अज्ञानतावश पूजा करते हैं," लेकिन शाश्वत बिल्डर, हमेशा के लिए पिता, जीवन के लिए जो नश्वर भाव क्षीण हो सकता है और न ही नश्वर विश्वास नष्ट हो सकता है। हमें मानव की गलतफहमियों को दूर करने और उन्हें जीवन के साथ बदलने की क्षमता का एहसास करना चाहिए जो आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं।

**19. 467 : 5 (तुम)-7, 13-16**

तुम्हारे पास न कोई बुद्धि है, न कोई जीवन है, न कोई पदार्थ है, न कोई सत्य है, न कोई प्रेम है, सिवाय इसके कि जो आध्यात्मिक है। ... कोई अन्य देवता नहीं होने से, उसे सिद्ध करने के लिए एक पूर्ण मन को छोड़कर अन्य किसी के पास जाने से, मनुष्य परमेश्वर की समानता, शुद्ध और शाश्वत है, उस मन को रखकर जो मसीह में भी था।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;"

ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 6